theryasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उप ज्योतिः चक्रथु आर्याय — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०२ ● १३ जनवरी, २०१५ माघ कृष्ण अष्टमी, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १९० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११५

मानव जीवन निर्माण के लिए आर्य समाज आन्दोलन की तीव्र आवश्यकता

–देवेन्द्रपाल वर्मा

सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने आर्यजनों के नाम प्रेषित एक सन्देश में कहा है कि आज मानवता का सर्वत्र क्षरण हो रहा है दानवता अपना विकराल रूप धारण कर रही है। कहीं कोई भी सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहा है। कहीं धर्म के नेता का आवरण ओढ़ लोग धर्म के नाम पर लोगों को ठग रहे हैं तो कहीं राजनीतिक नेता देशोन्नति के उपायों को नजरंदाज करके अपने वोट बैंक को मजबूत बनाने के लिए अपनी राजनीतिक प्रतिभा का प्रयोग कर रहे हैं। देश को समृद्ध बनाने की योजना ध्वस्त होती जा रही है। राजनेता अपने वक्तव्य राष्ट्र निर्माणकारी भावना से रहित केवल पार्टीबन्दी की भावना से ही देने में संलग्न रहते हैं। विरोधी पार्टी की सही बात के समर्थन के बजाय उसमें खुडपेंच लगाने उसके विरूद्ध बयानबाजी में संलग्न रहते हैं।

राजनीति राष्ट्र को सुसमृद्ध बनाने के स्वरूप का मार्गदर्शन देने की नीति है परन्तु उसका प्रयोग सही रूप में नहीं किया जा रहा है। छल छद्म किसी भी प्रकार अपनी सत्ता पाने व बनाने के रूप में उसका प्रयोग किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द ने देश के पराधीनता के मूल में नारी उत्पीड़न उसकी उपेक्षा, अशिक्षा, जाति पाति को भेद ढोंग पाखण्ड को पाया था जिसके कारण राष्ट्र छिन्न भिन्न हो रहा था। पराधीनता के त्रास को भोग रहा था। उन्होंने इस सभी से रहित पूर्ण सुखी समृद्ध भारत बनाने की भावना से आर्य समाज की स्थापना करके उसे आन्दोलन नाम दिया था और कहा था कि यह आन्दोलन निरन्तर चलते रहना चाहिए तभी सभी विकारों से हमें मुक्ति मिल सकेगी। हम स्वतंत्र हो सकेंगे, नारी समुचित सम्मान पायेगी, सुशिक्षित होगी और सन्तानों का निर्माण कर सकेगी। धर्म का सच्चा रूप जन-जन की समझ में आयेगा। ढोंग पाखण्ड हमें हानि न पहुँचा सकेंगे। आन्दोलन तीव्रगति से चला हम स्वतंत्र हुये परन्तु शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों की दासवृत्ति बनाने वाली ही चलायी जाती रही इससे आज हम स्वतंत्र कहे जाने के बावजूद पूरी तरह से परतंत्र है। हमें पराधीनता की वृत्ति ही रास आ रही है। हमें भारतीय संस्कृति भारतीय सभ्यता के प्रति अरूचि सी हो रही है। उसे दकियानूसीपन कहा जाने लगा। प्रोग्रेसिव कहलाने के लिए विदेशी मानसिकता का ही प्रसार किया जा रहा है, इसी से आज देश विघटन के कगार पर है, बाहरी दुश्मन हमारे देश की सत्ता को हथियाने के लिए छल छद्म साम दाम दण्ड भेद का प्रयोग कर रहे हैं तो आन्तरिक शत्रु अन्दर से उन्हें विविध रूपों में सहयोगी बनकर राष्ट्र को तोड़ने में व्यस्त है।

ऐसी अवस्था में हमें गम्भीर चिन्तन करते हुये आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रता से चलाने का संकल्प लेना है। हम आर्य बनकर ही मानवता के मूल को समझाने में समर्थ हो सकेंगे। आर्य के अन्दर स्वार्थ परता नहीं होती, वह सत्य व धर्म की रक्षा के लिए सदैव बलिदान देने को तत्पर रहता है। ऐसे विचारों वाले ही आर्य कहे जाते हैं उनका समाज ही आर्य समाज कहा जाता है। हम सभी आर्य समाज के सदस्य बड़ी गम्भीरता से देश की समस्याओं पर चिन्तन करें और उन समस्याओं से मुक्त राष्ट्र बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन की तीव्र गति से चलाने का संकल्प लें। अपने जीवन में यदि कहीं कुछ आलस्य या प्रमाद व शिथिलता आयी है तो उसे दूर करने का संकल्प लें। सच्चे आर्य बनें, और अपनी संगठन शक्ति के आन्दोलन को तीव्र करने में लगायें। निश्चय ही हमारे ऐसे प्रयत्न से देश में फैलते विकार नष्ट होंगे। आर्यत्व का मानवता का प्रसार व संरक्षण होगा और सुख समृद्धि से पूर्ण राष्ट्र के नागरिक बनकर विश्व को मार्ग दर्शन देने में समर्थ बनेंगे।

वेदामृतम्

ओ३म् अग्नेव्रतपते ब्रतंचरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्
इदमहमनृतात् सत्यमुर्पेमि...... यर्जु-१/५

अर्थ– हे व्रतों के रक्षक (अग्ने) सर्वोन्नति साधक परमेश्वर मैं (व्रतं चरिष्यामि) व्रत करना चाहता हूँ (तत् शकेयम्) उसे मैं भली भांति पूरा कर सकूँ (तन्मे राध्यताम्) मेरा यह व्रत सिद्ध, सफल होवे। (अहं) मैं (अनृतात्) झूठ को छोड़ (इदं सत्यमुपैति) इस सत्य को प्राप्त होता हूँ।

भावार्थ– सत्य जो वेद के अनुकूल प्रत्यक्ष आदि प्रमाण सृष्टि क्रम के अनुकूल आत्मा जिसे करने की साक्षी दे, विद्वज्जनों से अनुमोदित हो उसे सत्य कहते हैं, जैसा देखा जैसा सुना और जैसा अपने मन में हो उसे वैसा ही कहना और मानता।

व्रत जिसका वरण किया जाता है या जो दुर्गुणों का निवारण करे उसे व्रत कहते हैं। (नास्ति सत्यात् परोधर्मः) सत्य से बढ़कर कोई दूसरा व्रत या धर्म नहीं है।

-डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

बच्चे भगवान का रूप होते हैं-उनकी हत्या करने वाले मनुष्य नहीं साक्षात् राक्षस हैं

17.12.14 लखनऊ - आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में सभा प्रधान माननीय देवेन्द्र पाल वर्मा एवं सभा मंत्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने संयुक्त वक्तव्य में कहा है कि बच्चे भगवान की सच्ची धरोहर है उनकी हत्या करने वाले कम से कम मनुष्य तो नहीं हो सकते वे तो राक्षस हैं जो दयाविहीन है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि महाभारत काल में जब गुरू द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा पाण्डव पुत्रों की हत्या करके प्रसन्नता से दुर्योधन को सूचित करने गया था तो दुर्योधन सुनकर उस पर क्रोधित हो गया और कहा तूने महापाप किया है वंश का ही नाश कर दिया तुझे ईश्वर भी माफ नहीं करेगा। पाकिस्तान में बच्चों की हत्या करने वाले आतंकवादी सर्वथा हृदयशून्य हैं और महापापी हत्यारे राक्षस हैं उन्हें सख्त सजा मिलनी चाहिए। आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिए विश्व स्तर पर ही प्रयास करना होगा। आज पाकिस्तान अनुभव कर रहा है कि भारत वर्ष में अशान्ति पैदा करके स्वयं भी अशान्त ही रहेंगे जब पड़ोसी के छप्पर में आग लगती है तो पड़ोसी भी अपना छप्पर नहीं बचा पाते अतः आतंकवाद की भीषण समस्या का समाधान मात्र शान्ति हैं और सभी की उन्नति सभी को सुखी करने की कामना सभी को स्वस्थ रखने का संदेश यदि कहीं है तो वह वैदिक संस्कृति में हैं उप निषदों में आया है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती भी संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य हैं कहकर विश्व सेवा करते रहे। इसी भाव को "वसुधैव कुटुम्बकम्" सारी दुनिया एक ही परिवार है अतः परिवार की तरह अनुभव करते हुए आर्य समाज इस जघन्य काण्ड की घोर निन्दा करता है।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

आर्य समाज ही राष्ट्र को नष्ट होने से बचा सकता है।

आज हमारे राष्ट्र को हमारी संस्कृति को विनष्ट करने के लिए सभी तरह के उपाय किये जा रहे हैं। यह देश कभी विश्व गुरू था। सारे विश्व के लोग अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करने अपनी उन्नति का मार्ग जानने के लिए हमारे देश की ओर ही देखते थे। महाभारत काल से हमारी गिरावट आरम्भ हुयी, जब गुरूजन राजघरानों के बच्चों को पढ़ाने के लिए उनके घरों में जाने लगे। इसका प्रभाव हममें राजा, रंक, रईस गरीब का भेद पनपा। पहले जहां वेदानुकूल जीवन अपनाकर सबमें एकत्व ममत्व का भाव उपजता था वहीं ऊँच नीच का भेद पैदा होने लगा।

परमात्मा ने सृष्टि की रचना जीवात्माओं के कल्याण के लिए की है। सभी जीवात्माओं को उनके पूर्वकृत कर्मो के आधार पर शरीर देता है। जिनके निकृष्ट कर्म रहे उन्हें कीट पतंग, पशु पक्षी के शरीर दिये उसको भोग योनि की संज्ञा दी। जिनके कर्म अच्छे अधिक थे, उनको मानव का तन दिया गया। उन्हें कर्म करने की स्वतंत्रता दी गयी, जिन्हें कर्म करने की स्वतंत्रता नहीं दी उनके योग कर्म के रूप में बांटे जिनसे वह सम्पूर्ण सृष्टि के सुख साधन उत्पन्न करके अपने कुकर्मों का फल प्राप्त करके पुनः मालव तन पाने का अधिकार प्राप्त करें। जिन्हें मानव तन देकर कर्म करने की स्वतंत्रता दी उन्हें सही व गलत के ज्ञान के लिए आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान दिया। माता पिता की गोद दी गुरू जनों का सान्निध्य दिया जिनके माध्यम से सुशिक्षित होकर धर्म, अधर्म, कर्त्तव्य अकर्त्तव्य सत्य असत्य का परिज्ञान प्राप्त करने का सुयोग मिला।

हर युग में अच्छे बुरे लोग होते रहे हैं। अच्छे जन जो पूर्वा पर का विचार करके सभी के हितार्थ कार्यों का सम्पादन करते हैं उन्हें आर्य एवं उसके विपरीत आचारी को अनार्य कहा जाता है। आर्य आदणीय और अनार्य निन्दनीय होता है। महाभारत काल में वेद विरूद्धाचारियों का उपद्रव बढ़ने लगा और देश के राज परिवार में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अधर्म के बढ़ते उफान को देखकर योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति अधर्म के विनाश व धर्म स्थापन में लगा दी। जब उन्हें समझाने में सफलता न मिली तो युद्ध प्रारम्भ हुआ। महाराज कृष्ण ने धर्म पक्ष का ही साथ दिया युद्ध में विजय धर्म की हुई। परन्तु जो अधर्म का अंकुर उपज चुका था वह पूरी तरह से नष्ट न हुआ। धीरे धीरे गिरावट होती गयी, वेद ज्ञान का लोप होने लगा। मानव रचित पुराण आदि ग्रन्थों का बाहुल्य होने लगा। पुराण प्रचलित हुये जिनमें परमात्मा के विविध नामों में से एक नाम की प्रशस्ति और दूसरे की निन्दा का स्वरूप गढ़ा गया। उन्हें ही धर्म ग्रंथ मान लिया गया। फलतः आपस में विग्रह बैर विरोध बढ़ने लगा। उसी के परिणाम स्वरूप विदेशी यवन आक्रमणकारियों ने हमारे देश पर आक्रमण प्रारम्भ किये। हमें पराधीन बनाते रहे, हमारी सम्पदा लूटते रहे। पुराणपंथी धर्मगुरू हमारे अन्दर भीरूता भरते रहे (यह कहकर कि परमात्मा स्वयं प्रकट होकर शत्रु का संहार करेंगे)। यवनों के बाद अंग्रेज व्यापारी बनकर यहां आये हमें पराधीन बनाया हमें कंगाल किया और सदा सदा अपना गुलाम रखने के लिए हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति खत्म करके अपनी हमें सदा दास बनाये रखने वाली शिक्षा पद्धति चला दी। हमारे अन्दर पराधीनता की भावना गहरी होती गयी। हम उसी में रमकर अपने स्वत्व को भुलाते रहे। दासता में ही सुख ढूँढते रहे।

''हमारे सौभाग्य से महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। पराधीनता के मूल में नारी शोषण, उसका उत्पीड़न, ढोंग, पाखण्ड, वैदिक शिक्षा का अभाव, जिससे अशिक्षा, ऊँच नीच का भेद जाति पांति का भेद बढ़ता गया। बस उन्होंने सभी सुखों से परिपूर्ण राष्ट्र बनाने की भावना से सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की- आवाज लगायी वेदों की ओर लौटो- और कहा कि आर्य समाज कोई नया मत पन्थ या सम्प्रदाय नहीं है। ब्रह्मा से जैमिनी ऋषि प्रतिपादित वैदिक धर्म में आ गयी बुराइयों को दूर करने का एक आन्दोलन है। आर्य ही राष्ट्र को संवार सकते हैं अतः सभी आर्य जनों मातृशक्ति का सम्मान करो उसकी पीड़ा नष्ट करो। बिना किसी वर्ग जाति भेद के संगठित होकर राष्ट्र को पुनीत समृद्ध बनाओ। विदेशियों ने हमारी संस्कृति सभ्यता के विनाश के लिए अपनी शिक्षा पद्धति चला रखी है। अपनी प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति को पुनः लाओ और अपने गौरव को जानो। जागृति आई बालक बालिकाओं के वैदिक विद्यालय और गुरूकुल खुलने लगे। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें आर्य समाज के 85 प्रतिशत आर्य नर नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्य समाहित किये गये। परन्तु शासन की कुर्सी पर बैठने वालो ने विदेशी शिक्षा व्यवस्था नहीं बदली। केवल देश की भौतिक समृद्धि में लग गये। फलतः भौतिक समृद्धि में देश उत्तरोत्तर प्रगति पर है परंतु नैतिक चरित्र का उत्तरोत्तर ह्रास ही होता जा रहा है। चाहे धार्मिक क्षेत्र हो चाहे सामाजिक क्षेत्र हो चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो सभी जगह नैतिक चरित्र का ह्रास हो रहा है। धर्म के नाम पर अनैतिक चरित्र वाले सन्त भिन्डरवाला, सन्त आशाराम बापू, सन्त रामपाल दास जैसे चरित्रहीन उत्पन्न होकर धर्म का विनाश कर रहे है। सामाजिक क्षेत्र में पदों की लालसा में सामाजिक नेता गुटबाजी में लगकर सामाजिक सुधार को भुला रहे हैं तो राजनीतिक नेता अपनी अपनी सत्ता बनाने के लोभ में केवल वोट बैंक बढ़ाने की लालसा से देश के हित का विचार किये बिना एक दूसरे के विरूद्ध भाषणबाजी व लामबन्दी में लगे हैं। ऐसे में देश को नष्ट करने की भावना वाले तत्व अपने कार्यों में संलग्न है। विदेशी तत्व हमें पराधीन बनाने की जुगत में लगे हैं तो विदेशी मानसिकता क दास वृत्ति वाले हमारे घर के जय चन्द बनकर हमारी संस्कृति को विनष्ट करने के उपायों में जी-जान से लगे हैं।

अतः ऐसे विकराल काल में आर्य समाज आन्दोलन की नितान्त आवश्यकता है। हम सजग और सचेत होकर अपने को सच्चा आर्य बनायें, घर परिवार समाज को सच्चा आर्य बनने की प्रेरणा दें। पराधीन वृत्ति का सर्वथा परित्याग करने का संकल्प लें। अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी, अपनी भारतीय वेशभूषा को अपनायें। दूसरों को उसकी प्रेरणा दें। अंध श्रद्धा क विरूद्ध आवाज उठायें श्रद्धा को धारण करके सभी को श्रद्धावान बनने का मार्ग दर्शन दें। अश्रद्धा न पनपने दें। धर्म का सच्चा स्वरूप जान और मानकर सभी को सच्चे धर्म के स्वरूप को बताने में प्रवृत्त हों। निश्चय ही जिस क्षण हम अपने को सच्चा आर्य बना लेंगे हम संगठित होकर राष्ट्र को सभी विघ्न बाधाओं से बचाने में प्रयत्नशील होंगे तो कोई भी बाधा हमारे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर जाने से रोक नहीं सकेगी। भ्रष्टाचार अनाचार, नारी शोषण मारकाट की भावना ध्वस्त होगी। हम सुखी समृद्ध राष्ट्र के नागरिक बनेंगे और पूर्व की भांति हमरा देश सम्पूर्ण विश्व के मार्गदर्शक बनने का सौभाग्य प्राप्त करेगा।

सम्पादक

धर्मातरण मुद्दे पर हो रही राजनीति

-राजनाथ सिंह 'सूर्य'

आजकल धर्मान्तरण (जो वस्तुतः मतान्तरण) है के मामले पर देश का माहौल गर्म है। इस मसले पर इतनी गहमा गहमी इसलिए है क्योंकि पहली बार यह तथ्य प्रकाश में आ रहा है कि बड़ी मात्रा में इसाई और इस्लाम मतों में आस्था रखने वाले हिन्दू बन रहे हैं। इस प्रकार का शोरगुल या चर्चा उस समय कभी नहीं हुई (एक मीनाक्षीपुरम को छोड़कर) जब हिन्दू धर्म से बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम या ईसाइयत को स्वीकार किया था। क्या सचमुच मतान्तरण का मसला आस्था से जुड़ा है?शायद ऐसा नहीं है। क्योंकि जिन लोगों का मतान्तरण हुआ था या अब हो रहा है उनमें आस्था की पैठ का कोई प्रमाण नहीं है। सुविधा या जोर जबरदस्ती के कारण ही मतान्तरण हुए हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां धर्म अर्थात कर्तव्य पालन को प्रधानता मिली है।

उपासना की पद्धति के आधार पर कितने पंथ या संप्रदाय अस्तित्व में आये है और आते भी जा रहे हैं, इसकी गणना कर पाना संभव नहीं है। विवाद हिन्दू से इसाई या इस्लामी बनने पर है, जो उपासना पद्धति पर आधारित भारत में बाहर से आये हुए मजहब हैं। यदि स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा चलाए गए शुद्धिकरण अभियान की मूल भावना का संज्ञान लेना चाहें तो बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में महात्मा गांधी द्वारा मद्रास क्रिश्चियन एसोसिएशन में दिए गए भाषण का संज्ञान जरूर लेना चाहिए या जो बात देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने 1948 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कही थी। गांधी जी ने ईसाइयों से कहा था आप मतान्तरण से राष्ट्रान्तरण कर रहे हैं। नेहरू जी ने दीक्षांत समारोह में कहा था- हमारे और आपके पूर्वज एक ही थे। फिर अपने पूर्वजों के प्रति अनुराग से परहेज क्यों है।

इस देश में अनेक संप्रदाय या पंथ खड़े हुए क्योंकि वैचारिक स्वतंत्रता की गारंटी जीवन पद्धति का अंग रहा है। यही कारण है कि भारतीय मूल के संप्रदाय या पंथों में वैसा कोई टकराव नहीं रहा है जैसा ईसाई या इस्लाम में आस्था रखने वालों में आपस में रहा है या आज भी है। मैं यह बात ईसाइयत या इस्लाम की आलोचना के रूप में नहीं कह रहा हूँ बल्कि जो हकीकत है उसका संज्ञान दिला रहा हूँ। भारत में ईसाइयत प्रलोभन के माध्यम से फैला और जैसा तस्लीमा नसरीन ने कहा है इस्लाम तलवार के बल पर। यही कारण है कि भारतीय मूल के पंथों से जो लोग अलग होकर इनसे जुड़े वे गरीब अनपढ़ बने या झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले लोग हैं जो उपेक्षा के शिकार रहे हैं। यद्यपि ईसाइयत के अनुयायी देशों ने तकनीकी विकास में भारी सफलता प्राप्त की है और अनुगामी सोच के प्रतीक बनाए हैं लेकिन यूरोप और अमेरिका के बाहर एशिया तथा अफ्रीका के देशों में अनपढ़ गरीब लोगों में ही ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां सीमित हैं।

अभी तक एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जिसके बारे में यह कहा जा सके कि उसने ईसाइयत को समझ के आधार पर स्वीकार किया है। इस्लाम का प्रसार तलवार के बल पर हुआ है इसकी ऐतिहासिकता से इंकार नहीं किया जा सकता। तलवार या व्यक्ति के प्रभाव से अपने अनुकूल बनाने की प्रवृत्ति वित्त होकर तालिबान या अन्य आतंकी संगठनों के रूप में प्रगट हुई है जिससे अब इस्लामी देश भी परेशान हैं। भारत में इस प्रकार के लोगों की पैठ बढ़ाने में लगे पाकिस्तान में जो जघन्य काण्ड हुआ है, वही इसी प्रवृत्ति का द्योतक है। आस्था के आधार पर किसी पंथ या संप्रदाय में शामिल होने या किसी उपासना पद्धति को अपनाने का विरोध भारतीयता की अवधारणा के खिलाफ है। जैन और बौद्ध मत तथा बाद में खड़ा हुआ सिख समुदाय इसके मुख्य उदाहरण है। इसका मूल कारण है कि किसी परंपरा से अलग हटकर जीवन शैली अपनाने के बावजूद इनमें से किसी ने भी न तो अपनी संस्कृति से और न पूर्वजों से नाता तोड़ा है। इस्लाम या ईसाइयत स्वीकार करने वालों में भी यही स्थिति बनी होती तो शायद ही आज जो विवाद खड़ा हुआ है, उसका जन्म भी होता। जब तक देश आजाद नहीं हुआ था, तब तक सत्ताधारी की अनुकूलता प्राप्त कर अपने मतों के प्रसार करने वालों की प्रवृत्ति में परिवर्तन आने की जो अपेक्षा स्वाभाविक थी, वह धरातलीय नहीं बन सकी।

thearyasamaj.org

भारत हिन्दू राष्ट्र है

(नोट-लेखक के सभी विचारों से हमारी सहमति न होते हुये भी लेख पठनीय व विचारणीय है-सम्पादक)

-हितेश कुमार शर्मा

आदिकाल से और अनन्त समय से भारत हिन्दू राष्ट्र है और भारत का हिन्दू राष्ट्र के रूप में ही अभ्युदय हुआ है। रामायण काल को उठाकर देख लें। महाभारत काल को उठाकर देख लें। भारत एक हिन्दू राष्ट्र ही था और विश्व विजेता भी। उससे आगे बढ़े तो सम्राट विक्रमादित्य का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने भारतवर्ष को हिन्दू राष्ट्र के रूप में विकसित किया। सम्राट चन्द्रगुप्त ने भारतवर्ष की पहचान पूरे विश्व में एक हिन्दू राष्ट्र के रूप में कराई। तत्कालीन राजा पौरूष, आम्भिक सभी हिन्दू थे। महाराज पृथ्वीराज चौहान के समय में भी भारतवर्ष विदेशों में हिन्दू राष्ट्र के रूप में ही जाना जाता था। बाबर के हमले से पहले हिन्दू राष्ट्र के सन्दर्भ में ना कोई विवाद हुआ और ना ही कोई विपरीत तथ्य उपलब्ध है। हेमचन्द्र भारतवर्ष का आखिरी हिन्दू राजा हुआ है। बाबर ने कतिपय सिपाहियों के साथ हिन्दुस्तान पर हमला किया और तदुपरान्त उसकी संतति ने हिन्दुस्तान पर कब्जा रखा। तब भी हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र ही था। जहाँगीर, अकबर आदि सभी बादशाह अपने आपको हिन्दुस्तान का शंहशाह कहते थे और हिन्दुस्तान का मतलब था हिन्दू राष्ट्र। बहादुर शाह जफर हिन्दुस्तान के आखिरी बादशाह थे और वो भी क्रांति में अँग्रेजों के विरूद्ध खड़े हुए तब भी हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र के रूप में ही इंग्लैण्ड में परिभाषित था। अँग्रेजों ने हिन्दुस्तान को कोई और नाम नहीं दिया और ना ही मुगलों ने दिया। यह हिन्दू राष्ट्र था, हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दू राष्ट्र रहेगा।

और आगे बढ़िए तो भारत का बँटवारा भी अँग्रेजों ने एक षड्यन्त्र के तहत इसी आधार पर कराया था कि हिन्दु हिन्दुस्तान में रहेंगे और मुसलमान भाइयों के लिए पाकिस्तान का निर्माण किया गया और इसी आधार पर जनता का बँटवारा हुआ अधिकांश मुसलमान पाकिस्तान चले गए किन्तु सत्ता के लालच में महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू ने काफी मुसलमानों को हिन्दुस्तान में रोक लिया। बँटवारा न होता तो हिन्दू-मुसलमान में कोई दुश्मनी नहीं थी। आपस में मिलकर रहते थे, एक-दूसरे के दुख में काम आते थे। मेरे जब पथरी हुई थी तब मैं बहुत छोटा था पिताजी ने मुझे गोद में ले रखा था मैं भी रो रहा था और वह भी दुखी थे। मुझे आज भी याद है कि मेरे पड़ोस में रहने वाले हाजी कसीमुल्ला साहब ने पिताजी की धीरज बँधाया था और तकलीफ से निजात पाने की तरकीब बताई थी। मेरे दोस्त मुइनद्दीन के वालिद शरीफ स्व. हमीदुद्दीन साहब मुझसे बहुत मौहब्बत करते थे अब ये बातें पुरानी हो गईं। लेकिन इनका वजूद था जब तक बँटवारा नहीं हुआ था। हमारे दिल नहीं बँटे थे। यदि बँटवारे के बाद ईमानदारी से मुसलमान भाइयों को पाकिस्तान जाने दिया जाता और हिन्दूस्तान में रोकने की साजिश न की जाती तब भी दुश्मनी नहीं होती। दुश्मनी शुरू ही बँटवारे से हुई। मेरा मानना है कि मुसलमान एक अच्छा दोस्त होता है और मेरे व्यक्तिगत अनुभव में मुइनुद्दीन, मोहम्मद मुस्लिम, इस्लाम मोहम्मद शेर जैसे अच्छे दोस्त रहे हैं। अतः यह सिद्ध है कि बँटवारे के समय देश को हिन्दुस्तान नाम दिया गया था और हिन्दुओं के रहने का स्थान निश्चित किया गया था। तद्नुसार देश हिन्दू राष्ट्र के रूप में जाना गया।

धर्म निरपेक्ष एक ऐसा शब्द है, जिसको विपक्ष अक्सर इस्तेमाल करता है। धर्म निपरेक्षता क्या है इसको कोई नहीं जानता, जो नेता धर्म निरेपक्षता का गुणगान करते हैं क्या वह धार्मिक नहीं हैं। क्या वह धार्मिक स्थलों पर नहीं जाते। क्या वह पूर्णतया अधर्मी हैं। पूरे विश्व में ऐसा कोई राष्ट्र नहीं है जिसका कोई राष्ट्र धर्म न हो। किसी भी देश में धर्म निरपेक्षता का गुणगान नहीं होता। केवल बात बनाने के लिए धर्म निरपेक्षता का नारा उछाल दिया जाता है। जिन लोगों का धर्म है, जो धार्मिक हैं, जो धर्म के अनुसार पूजा-पाठ करते हैं, वह धर्म निरपेक्ष कैसे हो सकते हैं। वैसे भी कहा गया है स्वधर्मे मरणम् श्रेयः। परधर्मो भयावह। अतः अपना धर्म सर्वश्रेष्ठ है और उस पर जान देने में भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन कोई धर्म दूसरे धर्म के व्यक्तियों को मारने की अनुमति नहीं दे सकता। किसी पर धर्म को थोपा नहीं जा सकता।

इसी प्रकार से सम्प्रदायवादी-सम्प्रदायवादी का नारा लगाया जाता है। सम्प्रदायवादी कौन है, कौन सा राजनीतिक दल ऐसा है, जो सम्प्रदाय से मुक्त है। सब अपने-अपने साथ सम्प्रदाय को लेकर चलते हैं। फिर एक दूसरे को सम्प्रदायवादी कहना कहाँ तक उचित है। मुझे हँसी आती है और दुख भी होता है, जब राजनीति के ठेकेदार हिन्दुत्व पर बोलने वाले को सम्प्रदायवादी कहकर सम्बोधित करते हैं और खुद अल्पसंख्यक समुदाय/सम्प्रदाय के पीछे दौड़ते हैं। सत्ता में बने रहने के लिए बहुसंख्यकों के साथ अत्याचार करना तथाकथित नेताओं का धर्म बन गया है। तथा अल्पसंख्यकों को सर पर बैठाना इनके लिए गर्व का कारण बनता है। पूर्व प्रधानमंत्री कहते-कहते चले गए कि भारतवर्ष के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है। सपा के सुप्रीमो, काँग्रेस की हाईकमान सब ही अल्पसंख्यकों के हितों के लिए न्यौछावर रहते हैं। क्या यह सम्प्रदायवादिता नहीं है। हिन्दुत्व पर बोलने वाला सम्प्रदायवादी और अल्पसंख्यकों पर बोलने वाला समाजवादी माना जाए। यह कहाँ का न्याय है। भाजपा सम्प्रदायवादी, काँग्रेस, सपा, बसपा तथा जनता दल आदि असम्प्रदायवादी। अब जनता ही तय करे कि वह किसको क्या समझती है। तथाकथित सम्प्रदायवादिता थोपने वाले दल सत्ता से दूर ही रहे तो अच्छा है।

स्वयं स्व. जिन्ना साहब ने भारत को हिन्दू राष्ट्र के रूप में दखा था और हिन्दुओं के लिए छोड़ा था। जब पाकिस्तान मुस्लिम राष्ट्र कहलाया जा सकता है तो हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र कहने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए। जनता को समझ लेना चाहिए कि वह उन लोगों की बात नकार दे, जो भारतवर्ष को हिन्दू राष्ट्र मानने को तैयार नहीं हैं। जहाँ 75 फीसदी हिन्दू रहता है वह हिन्दू राष्ट्र कैसे नहीं हो सकता। हमें हिन्दू राष्ट्र का सपना सच करने की शपथ लेनी चाहिए। स्वयं गाँधी जी, जवाहर लाल नेहरू तथा मोहम्मद अली जिन्ना भारत/हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र मान चुके हैं। तो 'सबका' को आपत्ति क्यों है, मुसलमान भाइयों को आपत्ति क्यों हैं।

हिन्दू राष्ट्र बनने से मुसलमान भाइयों के साथ कोई अन्याय होगा इसकी कल्पना भी नहीं करनी चाहिए। मुस्लमान हमारे भाई हैं युगो-युगों से साथ रहते आए हैं घरों में आना जाना है और तो और बहुत से मुसलमान भाई वह हैं, जो मुगलिया काल में जबरन अथवा शौकिया मुसलमान बने हैं। ऐसे लोग हमसे दूर कैसे हो सकते हैं। मुसलमान हमारे अपने हैं, हमारे अपने रहेंगे, हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र कहने से उनके प्रति नजरिया नहीं बदलेगा। चुपचाप एक बात और कह दूँ। धर्म परिवर्तित मुसलमान भाईयों को पुनः अपने पुराने धर्म में लौट आना चाहिए और धर्मावलम्बियों को तथा धर्म के ठेकेदारों को उनके लौटने पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए बल्कि गले से लगाना चाहिए। रोटी, बेटी का व्यवहार धर्म बदलने को नहीं कहता। अकबर का धर्म और था और वह अपने धर्म का पालन करता था महारानी जोधाबाई का धर्म और था और वह अपने धर्म का पालन करती थी। दोनों में कभी टकराव नहीं हुआ। ऐसे ही आगे भी नहीं होगा। केवल सोच बदलने की आवश्यकता है और राजनीतिक ठेकेदारों के बहकावे में ना आने की आवश्यकता है।

विचार की नहीं विश्वास की आवश्यकता है। आदिकाल से लेकर अब तक हिन्दुस्तान जो हिन्दुस्थान कहलाता था वह हिन्दू राष्ट्र क्यों नहीं कहा जा सकता। सर्वभौम सिद्धान्त है जहाँ बहुसंख्यक हिन्दू रहते हैं वह स्थान हिन्दू राष्ट्र ही हो सकता है। अन्य कोई नाम उसको दिया ही नहीं जा सकता।

जय हिन्दू। जय हिन्दी। जय हिन्दुस्तान।

-गणपति भवन सिविललाइंस, बिजनौर

आदर्श कन्या इण्टर कालेज, भीष्म नगर, मवाना मेरठ

1. 10 दिसम्बर को आर्य समाज भीष्म नगर (भैंसा) मवाना मेरठ के संयोजन में वेद प्रचार आयोजन आदर्श कन्या इण्टर कालेज में किया गया। कार्यक्रम में ब्रह्मास्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती रहे तथा दिनेश दत्त आर्य दिल्ली के प्रभावशाली भजन हुए। स्वामी जी के प्रवचन का छात्राओं पर अच्छा प्रभाव रहा अजब सिंह प्रबन्धक प्रधान आर्य समाज ने सभी क्षेत्र के आर्यो को आमंत्रित किया। भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। आदर्श कन्या विद्यालय की प्रशंसा अनुशासन एवं पढ़ाई के विषय में स्तुत्य है छात्राओं ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रधानाचार्या ने सभी का आभार व्यक्त किया आचार्य हर्ष कुमार आर्य ने सभी का स्वागत किया। जिले सिंह आर्य मंत्री जिला सभा-राजमुनि अध्यक्ष क्षेत्रीय सभा रोहताश आर्य निडावली अरविन्द आचार्य गुरूकुल पूठ नागेन्द्र सिंह आर्य आचार्य रणधीर कुमार शास्त्री, अधिष्ठाता वेद प्रचार उ.प्र. मेरठ ने भी कार्यक्रम में आर्य जनता को सम्बोधित किया।

आर्य नगर गुरूकुल हिसार- हरयाणा

2. स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया जिसमें 30 नवम्बर से 7 दिसम्बर तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। ब्रह्मा के रूप में सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ हापुड़ रहे। राज्यपाल महोदय ने उद्घाटन किया एवं समापन पर दुष्यन्त चौटाला तथा स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये आचार्य विजयपाल जी गुरूकुल झज्जर ने अपना आशीर्वाद दिया। प्राचार्य श्री रामस्वरूप शास्त्री जी का भी अभिनन्दन किया गया।

3. 9 दिसम्बर को आर्य समाज निडावली मवाना मेरठ श्री रोहताश सिंह आर्य के परिवार में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री ने विशेष यज्ञ एवं वेद प्रचार किया। आचार्य अरविन्द जी रणधीर कुमार शास्त्री मेरठ के भी विचारों से जनता लाभान्वित हुई।

thearyasamaj.org

अब तो जाग जाओ: रामपाल काण्ड ने फिर चेताया है?

-प्रकाश आर्य

१८ वीं सदी में महर्षि दयानन्द ने सोते हुए समाज को निद्रा से जगाने के लिए अन्धविश्वास मिटाने के लिए लगभग १५० वर्ष पूर्व शंख नाद किया था। फिर धर्म और ईश्वर के नाम पर फैली अज्ञानता और उसमें पनपते पाखण्ड से समाज को बचाने के लिए प्रयास प्रारम्भ किया।

ईश्वर के नाम पर मानव पूजा धर्म की आड़ में बढ़ते अधर्म अत्याचार, पाखण्ड, और अनैतिक कार्यों से उलझती सामाजिक व्यवस्था को सही मार्ग दिखाने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना १८७५ में हुई। आर्य समाज की मान्यता का आधार कोई मानवीय विचारधारा नहीं महर्षि दयानन्द के ही विचार नहीं है उसका आधार परमात्मा का ज्ञान वेद हैं। आज धर्म के नाम पर गुरुडम फैल रहा है चेला, चेली, भक्त बनाने की नाम देने की परम्परा तेजी से फैल रही है। समाज की अव्यवस्थित दशा के कारण दुःखी, निराश, परेशान, निरुत्साही और अकर्मण्य लोगों को धर्म के नाम पर चमत्कार हाथ की सफाई, वाक् चातुर्यता और नकली भक्तों की एजेन्सी के द्वारा प्रभावित किया जा रहा है।

यह सब बहुत तेजी से हो रहा है, समाज की आध्यात्मिक भावनाओं का दुरुपयोग और शोषण हजारों व्यक्ति सन्त, महात्मा, कथावाचक, योगी, अवतार गुरूजी बनकर कर रहे है। बाहर की चमक धमक, भीड़, बड़े–बड़े आश्रम, अनेक चेलो चेलियों को निरन्तर साथ रहने वाली भीड़, भक्तों को आकर्षित करने के मुख्य साधन बन गए है।

ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था के विपरीत ऐसे लोग अपने भक्तों को उनके दुःखों से, अभावों से और तो और पाप कर्मों से भी मुक्ति दिलाने का आश्वासन देकर उन्हें आकर्षित करते हैं। मरता, क्या नं करता, ऐसे अनेक व्यक्ति तथाकथित सन्तों के शिकार हो जाते हैं। जबकि परमात्मा की कर्म व्यवस्था जिसमें मनुष्य को प्रत्येक कर्म का फल भोगना ही पड़ता है, कर्म फल से कोई बच नहीं सकता। कर्म फल का अन्त उसके भोग पूर्ण होने पर ही संभव है किन्तु यह तथाकथित सन्त बाबा इन सिद्धान्तों की उपेक्षा कर उन सभी पापियों को भी पाप से अधर्म कार्यों के फलों से मुक्त करके प्रसन्न कर देते हैं। बदले में दान के रूप में मोटी रकम, स्थायी रूप से उनके साथ आश्रम या निर्मित अड्डों पर रहकर उनकी सेवा भक्ति गुणगान, झूठी प्रशंसा आदि–आदि करना पड़ता है।

यह दुर्भाग्य है धर्म और ईश्वर तथा कर्म फल के संबंध में समाज अपना स्वयं का विवेक काम में नहीं लाता, अन्ध श्रद्धा जो प्रचार, दिखावे और बड़ी भीड के कारण उत्पन्न होती है, उसी के प्रभाव में अनजानी व अनचाही जगह से जुड़ जाता है। ऐसे धूर्तो के शब्दों और मान्यता के जाल में उलझा व्यक्ति गुमराह बन उसे ही सब कुछ मानने लगता है। ईश्वर के स्थान पर ऐसे सन्त, स्वामी बाबा गुरु पूजने लगते हैं। इस प्रकार धर्म और ईश्वर के सत्य मार्ग से भटक कर करोड़ों करोड़ों व्यक्ति अधर्म और व्यक्ति पूजा के पथ पर चल रहे है।

इस प्रकार की भीड का एक कारण और है आज व्यक्ति सत्य व ईमानदारी के स्थान पर झूठ और फरेब से अपना विकास करना चाहता है। समाज में तेजी से बढ़ती शोषण व भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति इसी का स्पष्ट परिणाम है। आदमी धर्म का पालन किए बिना अच्छा फल चाहता है। पाप कर्म करते हुए भी धर्म का फल चाहता है। धार्मिक बनना नहीं चाहता, दिखावा चाहता है। यह सब असंभव है। सनातन व्यवस्था ईश्वरीय सन्देश के विपरीत है किन्तु ऐसे बाबा, स्वामी, सन्त, गुरु प्रायः जिनका स्वयं का चरित्र भोग विलास राग द्वेष से पूर्ण है वे इन सबसे समाज को मुक्ति का रास्ता दिखा देते है। समाज को और क्या चाहिए। पाप करते हुए भी धर्म का फल, धार्मिक न होते हुए भी धार्मिकता का प्रमाण पत्र जब मिल रहा है तो इससे सस्ता सरल बिना प्रयास किए सर्वोत्तम मार्ग और क्या हो सकता है ?

भेड़ चाल की तरह चलना समाज बिना सोचे समझे बिना परिश्रम और धर्म का पालन किए ईश्वर को और धर्म के फल को प्राप्त करना चाहता है। भीड़ को देख उसके गुण दोषों को अनदेखा कर आंख मूंद कर भेड़ों की तरह वह ऐसे धूर्त पाखण्डियों समाज के चालाक नकली स्वामी बाबा सन्त, साधुओं, योगियों, की शरण में जाकर अपना लाभ चाहते है। भगवा या सफेद वस्त्र, टीका, दाढ़ी, से रचित स्वांग से भोले–भाले लोगों का शोषण करते हैं। भूल जाते हैं सीता का अपहरण करने वाला बाहर से स्वांग से साधू का रूप लेकर ही आया था।

सीताजी उनके बाहरी स्वरूप के कारण ही तो अपहरण हुई थीं। वही सबकुछ अब भी हो रहा है फर्क इतना है पहले एक साधु रावण ने अपहरण किया था और अब अनेक रावण साधू–सन्त वेश में समाज की सीता का अपहरण कर रहे हैं।

बिना किसी योग्यता, धर्म ग्रन्थ की दो–चार पुस्तकें पढ़कर, थोड़ी बोलने की कला सीखकर आज हजारों व्यक्ति शास्त्री, आचार्य, स्वामी, सन्त, के नाम से पूज रहे हैं। कोई उनसे पूछने वाला नहीं है कि आप स्वामी, सन्त, आचार्य कैसे और कब बन गए ?आपके जीवन में यह ज्ञान प्राप्त कैसे कहां से हुआ?यह नहीं देखते कि वह योगी है या भोगी?रामपाल नाम के व्यक्ति जिस पर प्रकाशित समाचार पत्रों व टी.वी., रेडियो न्यूज के द्वारा देशद्रोही, हत्यारा न्यायालय की अवमानना करने वाला बताया। अपने प्रभाव से हजारों लोगों के किसी प्रकार का सन्देश देकर ईमानदार उन्हें बन्धक बनाने वाला, भोग विलास में डूबा हुआ। अपनी सन्त के नाम से पहचान बनाने वाले ने अपने को भगवान तुल्य सिद्ध कर दिया, अनपढ़, अज्ञानी और स्वार्थी प्रायः ऐसे लोगों के सम्पर्क में आकर उलझ जाते हैं फिर इनके साथ कुछ इनके ही सहयोगी जनता को इनसे जोड़ने गुरुजी की महानता बताकर झूठी चमत्कारी कहानी सुनाकर जाल में फंसाते हैं।

२००८ में रामपाल के विरुद्ध आर्य समाज के द्वारा शासन को जानकारी दी गई थी कि रामपाल का जो आश्रम है, वह गलत गतिविधियों का केन्द्र है वहां पाखण्ड और अनाचार होता है। किन्तु झूठी शान शौकत नाम के प्रभाव के कारण शासन की समझ में नहीं आयी। किन्तु जब जन सैलाब गलत आपत्ति जनक गतिविधियों को रोकने के लिए उठ खड़ा हुआ और आश्रम के भीतर से गोलियां चली, जिसमें एक आर्यवीर शहीद भी हुआ। कई घायल हुए। फिर प्रशासकीय कार्यवाही की गई समाचार पत्रों के अनुसार रामपाल के आश्रय करौंथा आश्रम से काफी रूपया, जेवरात और आपत्तिजनक तथा अश्लील वस्तुएं जब्त की।

इस कारण रामपाल व कई साथियों पर मुकदमा दर्ज हुआ। आश्रम सीलकर बन्द कर दिया। किन्तु पुनः कुछ साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने आश्रम को खोलने की अनुमति दी। किन्तु रामपाल के अत्याचारों व पाखण्ड से परेशान जनता ने इसका विरोध कर पुनः आश्रम प्रारंभ करने का पुरजोर विरोध किया। संघर्ष हुआ प्रशासनिक कार्यवाही हुई और फिर इसमें ३ व्यक्तियों की जो आश्रम को खोलने का विरोध कर रहे थे, उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार सन्त के नाम पर हिंसा का ताण्डव, अत्याधिक गतिविधियों का हिंसा से प्रमाण मिलने के बाद भी सन्त के नाम रामपाल अपनी दुकानदारी चलाते रहे और अन्ध विश्वासी उनको फिर भी महान मानते रहे। अपने भक्तों की बढ़ती संख्या के मद में अपने को सर्वशक्तिमान मानने वाले रामपाल ने न्यायपालिका की भी अवहेलना कर उसके आदेश को भी नकार दिया।

दादागिरी या गुण्डागिरी को अपना शस्त्र बनाकर आश्रम के नाम पर गुनाहगारों का अड्डा बना दिया। चालाकी और धूर्तता का सहारा लेते हुए भक्ति भजन सत्संग के नाम पर अपने हजारों भक्तों को एक षड़यन्त्र के अन्तर्गत इकट्ठा कर लिया फिर उन्हें जबरदस्ती रोका और अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए मासूम बच्चों को भोली–भाली धर्म के नाम पर बुलाई महिलाओं का अपनी रक्षा के लिए आगे आश्रम के प्रवेश द्वारों पर बैठा दिया। प्रशासन व पुलिस द्वारा कई बार अपने आपको सरेण्डर करने की सूचना रामपाल को दी गई किन्तु अवहेलना की गई। प्रशासनिक कार्यवाही करने पर आश्रम में पहले से जमा अपने अंग रक्षकों के द्वारा पुलिस पर हमला करवा दिया। पेट्रोल बम, गोली, पत्थर, लोहे के टुकड़ों से रामपाल की सेना ने हमला किया।

गिरफ्तारी से बचने के लिए बीमारी का नाटक और आश्रम में न होकर कहीं और उपचार करवाने गए हैं, की झूठी खबर फैलाने का प्रयास किया गया। यह दृश्य टी.वी. चैनलों पर करोड़ों व्यक्तियों ने देखा। समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया। किसी सत्य कहने वालों का विरोध करने वाले ऐसे कई दुर्जन होते है जिन्हें सत्य से अपने स्वार्थ का नुकसान होता है या संभावना होती है।

रामपाल के विरूद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभियान छेड़ा था। क्योंकि आर्य समाज का मुख्य ध्येय समाज से अज्ञान को दूर कर सत्य का प्रतिपादन करना है।

सार्वदेशिक सभा के तपस्वी प्रधान आचार्य बलदेवजी के प्रयासों से इस नामधारी सन्त की असलियत समाज के सामने उजागर की गयी थी। पर खेद है समाज आर्य समाज की बात को गंभीरता से नहीं लिया अन्यथा इतना बड़ा जाल फैलाने में रामपाल कभी फलीभूत नहीं होता।

महर्षि दयानन्द जिनका सम्पूर्ण जीवन, जीवन का एक–एक क्षण परमार्थ व समाज के कल्याण के लिए था, उन्हें ही समाज नहीं समझ पाया। १६ बार प्राणों को दांव पर लगाने वाले महान समाज सुधारक की बातों को समाज सुन लेता तो देश में धर्म, कर्म, ईश्वर के नाम पर इतना पाखण्ड, अन्धविश्वास और कटुता नहीं फैलती।

यही कारण था रामपाल उस महर्षि दयानन्द के अद्भुत और अद्वितीय ज्ञानवर्द्धक ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पर ही भद्दी टिप्पणी करने लगा था।

जिस महान त्यागी चिन्तक, समाज व राष्ट्र हितैषी सन्यासी को संसार के हजारों महापुरुषों ने श्रेष्ठ बताया। जिसे अद्वितीय विद्वान व योगी माना उस स्वामी दयानन्द पर निम्न स्तर की विकृत बुद्धि से ही कीचड़ उछालना प्रारंभ कर दिया था। कई बार उसके इस कथन को चुनौती देते हुए चर्चा करते क्योंकि शास्त्रार्थ की योग्यता तो थी ही नहीं, बुलाया किन्तु एक बार भी इस हेतु तैयार नहीं हुआ।

खैर, रावण, कंस, दुर्योधन और देश पर राज्य करने वाले आततायी फिरंगियों का भी अन्त हुआ तो, इस नामधारी सन्त के अत्याचार, फरेब, धोखे से भरे कारनामों का अन्त क्यों नहीं होता?सत्य परेशान हो सकता है किन्तु पराजित नहीं होता। परमात्मा के यहां का न्याय भी जो सदा सत्य के साथ रहता है यहां भी ऐसा हुआ। आर्यों के द्वारा जन कल्याण के लिए अधर्म व पाखण्ड के लिए प्रारंभ किए गए कार्य को सफलता मिली और एक पाखण्ड का अन्त हुआ।

किन्तु सवाल एक रामपाल या तथाकथित २–४ सन्तों का नहीं है। हजारों ऐसे व्यक्ति चमत्कार वस्त्र, वाणी, मठ, मन्दिर, मजार, झाड़–फूंक, ताबीज के नाम पर चेला–चेली बनाकर बड़ी भीड़ प्रसाद, भण्डारे, आशीर्वाद के नाम पर धार्मिक भावनाओं का खुलकर समाज का शोषण कर रहे हैं और सनातन धर्म की मान्यता को नकारकर चल रहे हैं, गुरू बनकर करोड़ों की सम्पत्ति एकत्रित कर रहे हैं। सनातन धर्म के आधार वेद में कहा गया –

''स एष पूर्वेषामपिगुरूः कालेनानवच्छेदात् ।'' अर्थात् सबका सब गुरूओं का गुरू वह एक परमात्मा है जो हमसे कभी अलग नहीं होता। वही सबको बुद्धि देने वाला सबका स्वामी है वही हमारा राजा, आचार्य, गुरू व स्वामी है।

फिर हम इन सांसारिक गुरूओं को क्यों इतना महत्व देकर भगवान के समकक्ष समझ लेते हैं?यही सामाजिक बुराई, पाखण्ड और शोषण का कारण है। किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार मान सम्मान देना चाहिए किन्तु अन्ध भक्त बनकर सत्य को नहीं नकारना चाहिए। जब तक एक ईश्वर, एक धर्म (जो सिर्फ सनातन ही है) और कर्म फल पर विश्वास नहीं होगा तब तक साधु, सन्त, योगी के रूप में कई बहुरूपिये समाज में पैदा होकर

शेष पृष्ठ........7

thearyasamaj.org

जिनका जन्म दिन 30 दिसम्बर को मनाया गया

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एक दृष्टि में

-डॉ. अशोक आर्य

सांसदों तथा विधायकों को 'जन प्रतिनिधि' कहा जाता है। वर्तमान समय में राजनीति का स्तर इतना गिरता जा रहा है कि शायद ही कोई सांसद या विधायक गुटबन्दी से दूर रहकर सच्चे जन प्रतिनिधि के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करता हो। अब से 30 वर्ष पूर्व तक संसद तथा विधानसभाओं में ऐसे सदस्य होते थे जो राष्ट्रीय व प्रदेशीय समस्याओं के साथ-साथ अपने-अपने क्षेत्र की समस्याओं के निदान में स्वयं रूचि लेते थे। ऐसे ही सांसद रहे श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, जिन्होंने अपने लोकसभा व राज्य सभा के कार्यकाल में अपने ग्राम तथा क्षेत्र की समस्याओं के हल के लिए सदैव तत्परता दिखाई।

हसनपुर के खादर के छोटे से गांव रहरा के एक साधारण त्यागी, ब्राह्मण किसान परिवार में 30 सितम्बर 1922 को जन्मे प्रकाशवीर भले ही गुडगांव (हरियाणा) से लोकसभा सदस्य रहे हो या गाजियाबाद, हापुड़ सीट से, किन्तु अपने गांव तथा क्षेत्र की समस्याओं को उन्होंने हमेशा संसद में उठाया तथा उनके निदान के लिये व्यक्तिगत रूचि लेकर आदर्श जनप्रतिनिधि का दायित्व निभाया।

सन् 1968-69 में गंगा की भीषण बाढ़ में जब तहसील हसनपुर क्षेत्र का बहुत सा भाग जल में डूब गया तो शास्त्री जी दिल्ली से पत्रकारों का एक दल अपने साथ खादर क्षेत्र के अध्ययन के लिए लाए। उनकी जन्मस्थली रहरा चारों ओर से पानी से डूबी हुई थी। पत्रकारों को उनके साथ गुड़ बनाने की बड़ी बड़ी कढ़ावों से बनी नौका में बैठकर गांव के अन्दर जाना पड़ा था। शास्त्री जी ने पत्रकारों को इस बाढ़ की विभीषिका को आंखों से देखने का अवसर दिया। देश के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में इसके समाचार छपे उन्होंने सरकार का ध्यान आकृष्ट कराया तथा गंगा के तट पर बांध का निर्माण कराकर ही चैन की सांस ली।

गंगा का सर्वेक्षण कराया- शास्त्री जी केन्द्र सरकार के बाढ़ नियंत्रण विभाग को प्रेरित कर एक दर्जन पत्रकारों को गंगा की बाढ़ से प्रभावित गाजियाबाद, मुरादाबाद तथा बुलन्दशहर जिले के क्षेत्रों का अध्ययन कराने के लिए ब्रजघाट से नरौरा तक नौका यात्रा की व्यवस्था कराई थी। इस नौका अभियान में दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार ब्रह्मदत्त विद्यालंकार, अयोध्यानाथ बल, बनारसी सिंह, कृष्णा भाटिया, शिव कुमार गोयल कई छायाकारों के साथ शामिल थे। बाढ नियंत्रण विभाग के वरिष्ठ इंजीनियरों का दल भी साथ था। इस दल की रिर्पोट के बाद शास्त्री जी ने गंगा के किनारे कई जगह पानी रोकने के लिए अवरोधकों का निर्माण कराने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकार वे समय समय पर अपनी जन्मस्थली के आसपास के क्षेत्रों की समस्याओं के निदान में पूरी रूचि लेते थे।

प्रखर सांसद थे वे- आज जब हम राजनीति में सिद्धान्तहीनता, अवसरवादिता तथा स्वार्थपरता की चरमसीमा देखते है तो बरबस ही प्रकाशवीर शास्त्री जैसे प्रखर सांसद की याद ताजा हो उठती है, जिन्होंने सिद्धान्तनिष्ठा तथा प्रखर राष्ट्रवाद के माध्यम से संसद में अपना विशिष्ट स्थान बनाया था। शास्त्री जी आर्य समाज के प्रचारक थे तथा उन्होंने वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत बनाने का संकल्प लेकर ही राजनीति में प्रवेश किया था। लोक सभा तथा राज्य सभा में वह जब कभी भाषण देने खड़े होते थे राष्ट्रहित को सर्वोपरि महत्व देने तथा धर्म, समाज और संस्कृति का महत्व प्रतिपादित करने के अपने उद्देश्य की छाप अवश्य छोड़ते थे।

शास्त्री जी ने अपने जमाने के जाने माने शिक्षा शास्त्री तथा स्वाधीनता सेनानी आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के श्री चरणों में बैठकर गुरूकुल ज्वालापुर में संस्कृत तथा धर्म शास्त्रों का अध्ययन किया। वहीं से स्नातक की उपाधि लेने के बाद उन्होंने स्वदेशी, स्वभाषा हिन्दी, वैदिक धर्म आदि के प्रचार प्रसार के लिए जीवन समर्पित करने का संकल्प लिया। आर्य समाज के प्रचारक के रूप में उन्होने चन्दौसी (मुरादाबाद) को अपना केन्द्र बनाया तथा अपनी ओजस्वी भाषण कला के कारण वह कुछ ही समय में आर्य समाज के प्रभावी वक्ता के रूप में लोकप्रिय हो गये।

हिन्दी के पुरोधा- मौलाना आजाद के निधन के बाद गुडगांव संसदीय क्षेत्र के उपचुनाव में कांग्रेस ने जनसंघ छोड़कर आये पं. मौलीचन्द्र शर्मा को अपना प्रत्याशी बनाया तो जनसंघ, हिन्दू महासभा, रामराज्य परिषद तथा आर्य समाज ने प्रकाशवीर जी को संयुक्त प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतारा। पहली बार वह इस उपचुनाव में विजयी होकर लोकसभा पहुंचे। लोकसभा में उन्होंने अपने प्रथम भाषण में अंग्रेजी की जगह राष्ट्रभाषा हिन्दी को उपयुक्त स्थान दिये जाने के पक्ष में जब तर्कपूर्ण तथ्य रखे तो पूरा सदन उनके इस धारावाहिक भाषण को सुनकर स्तब्ध हो उठा था। उन्होंने कहा 'आज हमारा देश पूरी तरह स्वतंत्र है तब विदेशी भाषा अंग्रेजी की गुलामी क्या शर्मनाक नहीं हैं? हिन्दी सबसे सक्षम व वैज्ञानिक भाषा है उसका सबसे समृद्ध शब्दकोष है। अतः हमारे शासको को अंग्रेजी की मानसिक गुलामी से मुक्त होकर राष्ट्रभाषा हिन्दी तुरन्त लागू कर देनी चाहिए।

शास्त्री जी लोकसभा तथा राज्यसभा के वर्षो तक सदस्य रहे। संसद में उनके साथ अटल बिहारी बाजपेई, डा. लक्ष्मी मल्ल सिंधवी बाबू, गंगाशरण सिंह, रघुवीर सिंह शास्त्री, मधु लिमये, ओमप्रकाश त्यागी जैसे अनेक धाकड़ सांसद हुआ करते थे। वह ऐसा युग था जब कांग्रेस की नीतियों की कड़ी आलोचना के दौरान प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु तक स्वयं उपस्थित रहकर बहुत ध्यान से भाषण सुना करते थे। किसी की हो हल्ला मचाने की हिम्मत नहीं होती थी। आज जब लोक सभा व विधान सभाओं में कई कई दिनों तक होहल्ला व कभीकभी हिंसक वारदातें होती देखते हैं तब उस समय की संसद की गरिमा याद हो उठती है।

कश्मीर के बारे में चेतावनी- हिन्दी के अलावा शास्त्री जी के स्वदेशी, गोरक्षा तथा कश्मीर समस्या के विषय में बहुत स्पष्ट विचार थे। कश्मीर पर विवाद के लिये यह स्पष्ट रूप से कांग्रेस तथा नेहरू जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को जिम्मेदार मानते थे। उन्होंने लोकसभा में कहा था यदि नेहरू जी की जगह स्वाधीन भारत के पहले प्रधानमंत्री सरदार पटेल होते तो भारत कश्मीर जैसी समस्या का शिकार कदापि नहीं होता।

नेहरू जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण ही हमें युद्ध विराम कर पाकिस्तान द्वारा अपहृत कश्मीर के भाग से वंचित होना पड़ा है अन्यथा हमारी सेना पूरे कश्मीर पर कब्जा कर सकती थी। बाद में नेहरू जी ने शेख अब्दुल्ला के मोहजाल में फंसकर धारा 370 लागू कर हमेशा के लिए कश्मीर के समक्ष एक संकट पैदा कर दिया। अतः कश्मीर को 370 धारा के जाल से तुरन्त मुक्त कराकर वहां पूर्व सैनिकों को बसाने का काम तत्परता से करना चाहिए।

इसी प्रकार सन् 1966 के गोहत्या बन्दी आन्दोलन के दौरान शास्त्री जी ने सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की जोरदार मांग कर गोवंश को भारतीय आस्था का केन्द्र बिन्दु बताया था।

शास्त्री जी ने समय समय पर विदेशी कम्पनियों के मायाजाल से सावधान रहने की चेतावनी देते हुए स्वदेशी के महत्व को प्रतिपादित किया। उनका कहना था कि हमें जापान की तरह गांव गांव में लघु उद्योग लगाकर स्वदेशी स्तरीय वस्तुओं का निर्माण करना चाहिए अन्यथा कम्पनियां हमें आर्थिक गुलामी में जकड़ने में सफल होती रहेंगी। शास्त्री जी ने असम, कश्मीर, पश्चिम बंगाल तथा अन्य राज्यों में पाकिस्तानी तथा बंगलादेशी घुसपैठियों की विकराल समस्या के सख्ती से निदान किये जाने की भी चेतावनी समय समय पर दी थी। जब असम में वोटों के लालच में कुछ क्षुद्र स्वार्थी राजनैतिक दलों ने विदेशी मुस्लिम घुसपैठियों को संरक्षण दिया तो उन्होंने सन् 1973 में राज्यसभा में कहा था कि यदि इन विदेशी विघटनकारी तत्वों को खुला संरक्षण देना बन्द नहीं किया तो ये असम व बंगाल के स्थायी नागरिकों के लिए सिरदर्द साबित होंगे। साथ ही पाकिस्तान व बंगलादेश के लिए जासूसी कर देश की अखण्डता के लिए चुनौती बनेंगे।

शास्त्री जी के प्रत्येक भाषण में राष्ट्रभक्ति की अभिव्यक्ति होती थी। शास्त्री जी के संसद के भाषणों तथा उनके लेखों को पढ़कर देश के अनेक शीर्षस्थ पत्रकार लाला जगतनारायण जी, अक्षय कुमार जैन, डा. धर्मवीर भारती, शिव कुमार गोयल आदि सम्पादकीय आलेख लिखकर सराहना किया करते थे। शास्त्री जी लाला जगतनारायण जी के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे।

इमरजेंसी के दिनों में जब सरकार ने पंजाब केसरी का उत्पीड़न किया, उसकी बिजली काट दी गई तो उन्होंने तत्कालीन गृह राज्यमंत्री ओम प्रकाश मेहता को पत्र लिखकर इस प्रकार के उत्पीड़न के विरूद्ध चेतावनी दी थी।

हिन्दी हिन्दुस्तान तथा वैदिक धर्म का यह निष्ठावान सेवक 23 नवम्बर 1977 को जयपुर से दिल्ली लौटते समय एक रेल दुर्घटना में दिवंगत हो गया। केवल 55 वर्ष की अल्पायु में देश का राष्ट्रवाद का मुखर स्वर काल के क्रूर हाथों का शिकार हो गया।

साधना का एक युग हो प्रगति के बढ़ते चरण हों
दिव्य ज्योतिर्मय क्षितिज हो आस्था की रवि किरण हो।

●●●

thearyasamaj.org

परमात्मा

-यज्ञ नारायण सिंह

परमात्मा के विषय में संसार में अनेक विचार है। कोई कहता है परमात्मा नाम की कोई चीज नहीं है, प्रकृति ही सब संचालन करती हैं, इन्हें नास्तिक कहते हैं, इस विचार के लोग चार्वाक समर्थक है। इसके अलावा बौद्ध धर्म, जैन धर्म भी ईश्वर के स्वरूप को नहीं मानते।

परमात्मा की शक्ति को मानने वाले लोग आस्तिक कहलाते हैं। इसमें भी कई प्रकार की सोच रखने वाले है। प्रश्न हो सकता है कि वह चेतन शक्ति परमात्मा कहां रहता है? संसार के सेमेस्टिक धर्म यहूदी, ईसाई, इस्लामी कहते हैं कि वह परमात्मा सातवें आसमान में रहता है। वहां से इस लोक पर शासन करता है। ईसाईत का कहना है कि हजरत मसीह भी परमात्मा की गोद से सातवें आसमान से ही उतरे और इस धरती पर जन्म लेकर मरने के बाद फिर इस लोक के लोगो को अपने भाग्य पर छोड़कर ऊपर के लोक में चले गये। मुहम्मद साहब कि कुरान आयतें भी ऊपर से ही उतरती रही। भारत के पुराणों के अनुसार विष्णु क्षीर सागर में रहते हैं। जरूरत पड़ने पर अवतरित होते हैं दुष्टों का नाश करके पुनः चले जाते हैं। भगवान राम और कृष्ण भारत में अवतार लेकर राक्षसों का नाश करके वापस चले गये। ऐसे 24 अवतार बताये जाते हैं।

वेद और उपनिषद का कहना है कि परमात्मा ऊपर के किसी लोक में नहीं रहता वह सब जगह रहता है। कण-कण में, अणु अणु में उसका वास है वह व्यक्ति विशेष नहीं शक्ति विशेष है। ऊपर नीचे का प्रश्न तभी बनता है जब वह शक्ति न होकर व्यक्ति हो जिसके रहने विचरने के लिए किसी जगह की जरूरत हो जो सब जगह है उसके लिए विशेष की जरूरत नहीं होती।

दूसरा प्रश्न उठता है कि वह दिखता कैसे है उसे मानें तो कैसे मानें किसी वस्तु के न दिखने के दो कारण हो सकते हैं- या वह इतनी दूर हो कि न दिखती हों या इतनी पास हो कि न दिख सकती हो। सेमेस्टिक धर्म के लोग कह सकते हैं कि ईश्वर सातवें आसमान पर रहता है इसलिये दूर होने के कारण नहीं दिखता परंतु दूर होने के कारण न दिखने पर इसका भौतिक शरीर मानना पड़ता है जिससे उसके सर्व व्यापक स्वरूप होने में शंका खड़ी होती है। उपनिषउद का कहना है कि क्योंकि वह सब जगह मौजूद है इसलिये वह दिख ही नहीं सकता। वही चीज दिख सकती है जो हर जगह मौजूद न हो वह तो "ईशा वास्यं इदं सर्वम" अर्थात् सब जगह मौजूद है अणु अणु में मौजूद है फिर दिखे कैसे, देखने के लिए फासला चाहिए आंख आंख को नहीं देख सकती क्योंकि मेरी देखने वाली आंख और मेरी दिखने वाली आंख में कोई फासला नहीं है। मैं अपनी आंख को दर्पण में देख सकता हूँ क्योंकि दर्पण में दिखने वाली आंख और देखने वाली मेरी आंख में फासला पैदा हो जाता है। जब परमात्मा और मेरे में कोई फासला नहीं है तब वह दिखे कैसे।

वेदों उपनिषदों में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है-

स पर्यगात् शुक्रं अकायं अव्रणं अस्नाविरं शुद्धम अपाप विद्धम्।

कवि मनीषीः परिभूः स्वयम्भू याथातं थ्यतो अर्थात् व्यवदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

वह परमात्मा सर्वव्यापक, सर्व शक्तिमान, शरीर रहित, फोड़ा फुन्शी रहित, नस-नाड़ी के बन्धन से मुक्त, शुद्ध स्वरूप पाप रहित है। परमात्मा क्रान्तिदर्शी सब कुछ जानने वाला सबका अधिष्ठाता और स्वयमभू है वह अनादिकाल से निरन्तर यथावत प्रकार से सृष्टि के सब व्यवहारों का सारा प्रबन्ध करता है।

वेद के शब्दों में भक्त पुकार पुकार कर कहते हैं-

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्य वर्ण तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्थाः विद्यतेऽयमाय।।"

मैं उस प्रभू को जानू जो सबसे महान है जो करोड़ो सूर्यो के समान देदीव्यमान है, जिसमें अन्धकार और अविद्या का लेश भी नहीं है। उसी परमात्मा को जानकर मनुष्य दुखों से संसार रूपी मृत्यु सागर से पार उतरता है। मोक्ष प्राप्ति का और कोई उपाय नहीं है।

माण्डुक्यो पनिषद का ऋषि कहता है-

न तत्र सूर्यः भाति, न चन्द्र तारकं, न इमाः विद्युतः भान्ति, कुतः अयम् अग्निं। तं एव भान्तं अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्व इदम् विभाति।

परमात्मा के लोक में न सूर्य की रोशनी काम करती है न चन्द्र और तारे की, न वहां विद्युत का प्रकाश काम करता है फिर अग्नि का प्रकाश क्या कर सकता है। उसी के प्रकाश से सूर्य, चन्द्र, तारे अग्नि प्रकाशित हो रहे हैं।

यजुर्वेद का निम्न मंत्र भी परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान कराता है।

उदुत्यंजातं वेदसन्देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।

इन वाह्य चक्षुओं से वह दृष्टि में न आया।
चाहा पता लगाना उसका पता न पाया।
होकर निराश जब मैं घर लौटे आ रहा था।
सृष्टि का जर्रा-जर्रा प्रभु गान गा रहा था।
दर्शन प्रभु के करके जब मन मेरा न माना।
भर कर खुशी में उसने गाया नया तराना।
जीवन में ज्योति प्राणों में प्रेरणा तुम्हीं हो।
मन में मनन वदन में नव चेतना तुम्हीं हो।

महाभारत काल के पहले तक भारत में वेदों का प्रभाव था एकेश्वर वाद था। सभी एक ही परमेश्वर की आराधना करते थे। बहुदेव वाद और मूर्ति पूजा के जाल में नहीं फंसे थे। मूर्ति पूजा तो भारत में 2500 वर्ष पहले जैनियों द्वारा लाई गयी। उसी के फलस्वरूप भारत गुलाम हुआ और पतन की पराकाष्ठा तक पहुँच गया। देश को बचाने के लिए अन्ध विश्वास, मूर्ति पूजा, अज्ञानता आदि से बचना होगा। तभी भारत पुनः विश्व गुरू बन सकता है। इसलिए वेदों की ओर लौटो। वेदों में है न तस्य प्रतिमास्ति ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं होती। इसलिए मूर्ति पूजा का कोई प्रश्न ही नहीं है।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में लिखा है- "ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।

परमात्मा कहां रहता है, क्या करता है इस विचार को समझने के लिए एक सुन्दर दृष्टांत है। एक जिज्ञासु राजा ने अपने मंत्री से पूछा परमात्मा कहां रहता है और क्या करता है। मंत्री चकराया कि क्या उत्तर दें? जब उसके समझ में कोई उत्तर न आया तो उसने राजा से एक सप्ताह का समय मांगा। मंत्री को कोई उत्तर सूझ नहीं रहा था तो उसके छोटे पुत्र ने पूछा पिता जी आप बहुत उदास रहते है क्या बात है। पिता ने राजा के प्रश्न को बताया और कहा इसका कोई उत्तर सूझ नहीं रहा है बालक ने कहा इसका जवाब मैं दे दूंगा आप चिन्ता न करें। बालक के साथ मंत्री जी दरबार पहुंचे। राजा ने कहा आइये मंत्री जी सभी आपके उत्तर के लिए उत्सुक है। मंत्री जी ने कहा इसका जवाब तो मेरा बालक ही दे देगा। बालक मंच पर पहुँचा राजा ने कहा कि मेरा प्रश्न है ईश्वर कहां रहता है। बालक ने कहा राजन पहले बालक को खिलाया पिलाया जाता है फिर प्रश्न पूछा जाता है। आपने पहुंचते ही प्रश्न पूछना शुरू कर दिया। राजा झेंपा फिर बालक की इच्छानुसार एक कटोरे में दूध मंगाया। कटोरे के दूध को बालक ने हाथ में लेकर अंगुली से उसमें से मक्खन निकालने का प्रयास करने लगा। राजा ने कहा दूध पियो और मेरे प्रश्न का उत्तर दो बालक ने कहा आपके प्रश्न का उत्तर ही तो दे रहा हूँ, दूध में घी है उसी को निकाल रहा हूँ। राजा ने कहा घी ऐसे थोड़े ही निकलेगा, घी निकालने के लिए कुछ क्रियायें होती है तब घी निकलता है। बालक ने कहा जब दूध से घी बनाने में क्रियायें होती है तो ईश्वर को देखने के लिए भी यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि की साधना के बाद ईश्वर की प्राप्ति होती है। बालक के उत्तर से राजा संतुष्ट हो गये। राजा ने पूछा हमारा दूसरा प्रश्न है ईश्वर क्या करता है? बालक ने राजा से कहा आप मुझसे किस रूप में प्रश्न कर रहे हैं। राजा ने कहा यही कि मैं शिष्य हूं और तुम गुरू हो। बालक ने कहा गुरू शिष्य का ऐसा ही सम्बन्ध है कि गुरू नीचे बैठे और शिष्य सिंहासन पर ऊँचे बैठे। राजा हंसते हुए सिंहासन से नीचे आ गये और बालक को सिंहासन पर बैठने को कहा। राजा ने कहा अब बताओ परमात्मा क्या करता है। बच्चे ने कहा बस यही जिसको चाहता है सिंहासन पर बैठा दे और जिसे चाहे सिंहासन से उतार दें। राजा से रंक और रंक से राजा क्षण भर में बना देता है।

प्रधान आर्य समाज सिरसा, इलाहाबाद
लाला राम लाल अग्रवाल इंटर कालेज
सिरसा- इलाहाबाद

संस्थापित-1885
श्रीमद्दयानन्दाब्द-190

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं0-0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक-24 एवं 25 जनवरी,2015 तद्नुसार शनिवार एवं रविवार

(तिथि-माघ शुक्ल पक्ष चौथ एवं पंचमी) सम्वत्-2071

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण- 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य बन्धुओं/बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का द्वि-दिवसीय वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 24 एवं 25 जनवरी, 2015 तद्नुसार शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला उप सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला उप सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेज दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त श्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि 15 जनवरी, 2015 तक जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में माननीय सभा प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः-

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/- प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।
(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः- दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश ।
(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/-
(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/- वार्षिक
(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/- इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।
(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/- अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/- के हिंसाब से।
(ज) जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/- दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/- आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/- भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।
(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। <u>बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ</u> के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था है साथ ही भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस अधिवेशन में उच्च कोटि के सन्यासी/महात्मा, विद्वान/विदुषियों महोपदेशकों/ भजनोपदेशकों के अलावा विशिष्ट राजनेतागण भी पधारेंगे।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः-

दिनांक 24-01-2015 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल	8.00 बजे	-	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल	10.00 बजे	-	ध्वजारोहण- माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल	11.00 बजे	-	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।

1 बजे से भोजनावकाश

द्वितीय सत्र

अपराह्न	2.00 बजे से	-	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
	,,	-	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
	,,	-	वार्षिक वृत्तांत एवं आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत।
	,,	-	अनुमानित आय-व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
अपराह्न	3.00 बजे से	-	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल	6.00 बजे	-	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल	7.00 से 9.00	-	सामाजिक कुरीतियाँ, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल (मद्यनिषेध/नशाबंदी/दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि	9.00 बजे	-	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिन दिनांक 25-01-2015 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल	8.00 से 9.00 बजे तक	-	राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
प्रातःकाल	10.00 बजे से	-	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
दोपहर	1.00 बजे	-	भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

अपराह्न	2.00 बजे से	-	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन
	सायं 4.00 बजे	-	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(देवेन्द्रपाल वर्मा)
प्रधान

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
मन्त्री

(डॉ0 धीरज सिंह)
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज अजमेर का 133 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर का 133वां वार्षिकोत्सव 21 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 तक चार सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक सत्र में यज्ञ चतुर्वेद शतकम् पारायचण मंत्र भजनों एवं विद्वानों के प्रवचन हुए।

आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार आर्ष गुरूकुल नोएडा उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व में वेदपाठ हेमन्त तिवारी, इन्द्रजीत आर्य, अंकुर आर्य आदि ने किया। इस अवसर पर आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने यज्ञ, श्रद्धा, ओ३म् के झण्डे आदि का जीवन में महत्व बताया। सुमधुर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य एवं आर्य जगत की प्रसिद्ध साध्वी डॉ. उत्तमायति तथा स्थानीय दयानन्द बाल सदन (अनाथालय) की कु. सुमित्रा आर्य, कु. नैना आर्य, कु. नेहा आर्य, ब्रह्मचारी आकाश आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, खुशवन्त सिंह आर्य, भूपेन्द्र सिंह आर्य, मुकेश सिंह आर्य ने प्रस्तुत किये।

चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सत्र-प्रधान सर्वश्री प्रो. रासा सिंह, पूर्व सांसद, वरिष्ठ उप प्रधान सर्वश्री सोम रत्न आर्य, सर्वश्री संजय अरोड़ा, सर्वश्री रविन्द्र खन्ना आदि

आर्य नेता ब्रह्मचारी राजसिंह का हृदयगति रूकने से देहान्त

आर्य नेता ब्रह्मचारी राजसिंह का दिनांक 5.1.15 को हृदयगति रूकने से देहावसान हो गया। वे उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में भाग ले रहे थे। उनका शव जन सामान्य के दर्शनार्थ 15 हनुमान रोड, आर्य समाज के प्रांगण में रखा गया। दिनांक 6.1.15 को निगम बोध घाट पर अन्त्येष्टि संस्कार के लिए 15, हनुमान रोड से शवयात्रा प्रारम्भ हुयी। जिसमें सहस्त्रों आर्यो ने भाग लेकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

सूचना पाकर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा शव यात्रा में भाग लेने पहुँचे।

ब्रह्मचारी राजसिंह उच्च कोटि के विद्वान वक्ता, लेखक एवं यज्ञ विशेषज्ञ थे। उनमें संगठन को सुदृढ़ बनाने की अद्वितीय क्षमता थी। वे आर्य सन्देश साप्ताहिक के सम्पादक थे। उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सुगठित बनाकर सारे देश में उसके गौरव को स्थापित किया है। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संगठन को भी सुदृढ़ बनाने में अपूर्व योगदान आजीवन देते रहें।

उनकी स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के सभा कक्ष में दिनांक 6.1.15 को शोक सभा हुयी जिसमें श्री अरविन्द कुमार आर्य उपप्रधान सभा, डॉ. भानु प्रकाश आर्य विशिष्ट सदस्य श्री शिव कुमार कौशल, आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक आर्य मित्र, श्री सियाराम वर्मा-कार्यालय अधीक्षक सभा, श्री कृष्ण मुरारी, श्री भुवन चन्द पाठक, श्री आशुतोष सिंह कार्यालिय लिपिक, श्री गोविन्दराम, श्री शत्रुघ्न शर्मा, श्री रिसाल सिंह, श्री अमर आदि ने ब्रह्मचारी जी के प्रति श्रद्धासुमन भेंट किये एवं दिवंगतात्मा की सद्गति एवं दुःखी परिजनों को मनः शान्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गयी।

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट में विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट पंजाब में दिनांक 30 नवम्बर 2014 को विश्व शान्ति महायज्ञ का समापन किया गया। यह यज्ञ 27 नवम्बर से शुरू होकर 30 नवम्बर तक चला। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सुनील दत्त शास्त्री जी फिरोजपुर ने तीनों दिन लगातार अपने अमृतमय वचनों व ज्ञान वर्षा के द्वारा श्रोतागणों व यजमानों को मन्त्रमुग्ध करते रहे। आर्य भजनोपदेशक पं. सत्यवीर आर्य व पं. प्यारे लाल आर्य बुलन्दशहर ने बड़े ही सुमधुर भजन सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। इस शुभ अवसर पर दिनांक 30 नवम्बर 2014 को मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी पधारे। उनका स्वागत बड़े ही उत्साह एवं प्रेममय वातावरण में किया गया।

सतीश कुमार शर्मा, मंत्री
आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट, पंजाब

भूल सुधार

दिनांक 6.1.15 के आर्य मित्र के अन्तिम पृष्ठ पर प्रेस की गलती से बृहद्धिवेशन (साधारण सभा के अधिवेशन) की सूचना में दिनांक 24 एवं 25 जनवरी, तदनु बृहस्पतिवार व शुक्रवार छप गया है जबकि 24 एवं 25 जनवरी, को शनिवार एवं रविवार है। पाठकगण इसे सुधार लें। अशुद्ध छपने हेतु क्षमाप्रार्थी हूँ।

-सम्पादक

पृष्ठ.............4 का शेष

समाज का शोषण करते रहेगें।

पूजा, पाठ अंगूठी, तन्त्र, मन्त्र, ताबीज, गुरूनाम के आधार पर समाज को कर्म व्यवस्था से दूर कर अकर्मण्य वादी भाग्यवादी बनाते रहेगें। कर्म फलों से जिसमें कितने भी बड़े पाप हों, उनसे मुक्त कराने का झूठा प्रलोभन देकर समाज को गुमराह करते रहेगें। परमात्मा की कर्म फल व्यवस्था के विरूद्ध अपनी चालाकी से दुकान चलाते रहेगें। सही अज्ञानता समाज में पापाचार, अत्याचार को फैला रही है। इसलिए आज आर्य समाज के विचारों की आवश्यकता है जिससे इन अन्धविश्वासों, मानवीय पूजा और बिन कर्म किए कुछ साधनों से सबकुछ प्राप्त करने की विचारधारा को गलत बताया है। सत्य कर्म और पुरुषार्थ से ही पाप वृत्ति का अन्त होता है।

किन्तु यह सब इसलिए बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अज्ञान, पाखण्ड और अन्धविश्वास को नष्ट करने वाली संस्था के सदस्य आर्यजन उतने सक्रिय नहीं है जितना होना चाहिए। गुरुवर दयानन्द के द्वारा जो राह पाखण्ड खण्डिनी की दिखाई थी उस पर दृढ़ता से चलकर समाज को बचाना होगा। तब कहीं धर्म के नाम पर चह रहे व्यापारिक षड़यन्त्रों से समाज को मुक्ति मिलेगी।

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
...भी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१९२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मल-a...abhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

....

वेद कथा व सर्वमंगल यज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग गोपाल गंज, भीलवाड़ा (राज.) तथा आर्य वीर दल व आर्य बाल विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 26 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 14 तक आजाद चौक भीलवाड़ा में वेद कथा व 21 कुण्डीय सर्व मंगल यज्ञ आयोजित किया गया है, जिसमें आचार्य श्री आनन्द पुरूषार्थी अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता होशंगाबाद म.प्र. के भजन प्रवचन एवं आचार्य श्री प्रदीप शास्त्री फरीदाबाद हरियाणा के भजनोपदेश होंगे। कार्यक्रम नित्य प्रातः 8:30 बजे से 11 बजे तक तथा सायं 3:30 से 5:30 बजे तक होगा।

प्रदीप शर्मा
प्रधान, आर्य समाज भीलवाडा

आर्य समाज व महिला आर्य समाज कायमगंज का 136वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज व महिला आर्य समाज कायमगंज का 136वां वार्षिकोत्सव दिनांक 26, 27 व 28 दिसम्बर 14 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री बिजनौर, संगीताचार्य योगेश दत्त नजीबाबाद एवं आचार्या प्रियंका भारतीय भजनोपदेशिका कन्या गुरूकुल मूसावर भरतपुर (राजस्थान) के प्रेरक उपदेश व भजन हुए।

नित्य प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ भजन व प्रवचन, मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक विविध सम्मेलन रात्रि 7 से 10 बजे तक भजन प्रवचन हुए, जिसका श्रोताओं ने श्रद्धापूर्वक श्रवण लाभ लिया।

स्वागतम् माघ मेला-2015 प्रयाग

प्रयाग का कुम्भ व माघ मेला प्रसिद्ध है और इस मेले में वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं के साधु संत अपने अपने दार्शनिक विचारों/मतों के प्रचार के लिए माह पर्यन्त आते हैं। इस वर्ष माघ मेला दिनांक 05.01.2015 से 04.02.15 तक चलेगा।

महर्षि दयानन्द जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में स्वयं देखा था कि किस प्रकार से भोली भाली जनता को धर्म के नाम पर ठगा जाता है। धर्म के नाम पर ठग विद्या को देखकर इस प्रकार के मेलों से महर्षि दयानन्द जी के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी थी। और इसी कारण आर्य समाज इन मेलों को पाखण्ड मानते हुए सामान्य तौर पर दूर रहता है। हालांकि ऋषि जी के कालखण्ड की विडम्बनाओं के स्वरूप में वर्तमान में काफी परिवर्तन हो गया है किन्तु आध्यात्मिक भूख के कारण 'किम् कर्तव्य मूर्खता रूपी विडम्बना भी बनी हुयी है। इसका सबसे बड़ा कारण वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं की विरोधाभाषी विचारधाराओं का बना रहना है।

पिछले कई दशकों से हम आर्य समाजी भी समुचित तरीके से आम जन मानस को वैदिक धर्म के मूल तत्वों से अवगत कराने में असफल रहे हैं। और कहावत भी प्रचलित हो गयीं- दूसरों को जगाते जगाते स्वयं सो गये आर्य समाजी ।

पिछले कई दशकों से आर्य उप प्रतिनिधि, प्रयाग अपने सहयोगी आर्य सभाओं के सहयोग से यथासम्भव जन जागरण करती आ रही है इस बार और अच्छा कार्य करने की उम्मीद है। हम सभी आर्य समाजी विद्वानों/प्रचारकों/संतों को माघ मेले का सदुपयोग हेतु सादर आमंत्रित करते हैं। आवास एवं भोजन की यथोचित व्यवस्था रहेगी।

दान दाताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि सत्विक दान देकर वैदिक धर्म के व्यापक प्रचार प्रसार हेतु हमें सहयोग करें। जो संस्थायें वैदिक धर्म/आर्य समाज से सम्बन्धित प्रचार प्रपत्रों/लघु पुस्तिका निशुल्क वितरण करना चाहता है उनका भी स्वागत है। हमारा बैंक खाता संख्या 24440100037154 बैंक आफ बडौदा, इलाहाबाद है जिसका RTGSINEFT IFSC CODE BARBO ALBANS है।

अजेय कुमार, मंत्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा-प्रयाग

"आर्य जनता सावधान हो"

प्रयाग में माघ मेला वेद प्रचार शिविर 14 जनवरी 2015 से प्रारम्भ हो रहा है। ऐसे अवसर से लाभ लेने निमित्त हीरा लाल शर्मा जो अपने को जिला आर्य समाज का प्रधान और श्री संतोष कुमार शास्त्री अपने को सभा उ.प्र. का मंत्री बताते हैं और धन वसूली करते हैं। जबकि यह दोनों व्यक्ति समाज से निष्कासित है। कुम्भ मेले में वसूले धन का हिसाब आज तक जिला सभा को नहीं दिया है। इनके इस कृत्य की भर्त्सना जिला सभा की सम्पन्न बैठक दिनांक 16-11-2014 को की गई है और आर्य जनता को इनके गुमराह करने से सचेत किया गया है। प्रदेश की आर्य जनता भी सजग रहे। इन्हें किसी भी प्रकार की धनराशि न दें।

डा. जे. आर. शर्मा, प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, प्रयाग

स्वास्थ्य चर्चा-

डायबिटीज में तीन काम

डायबिटीज मधुमेह या शुगर की बीमारी या यूँ कहें, इस रोग में ऊर्जा, शक्ति, पावर, एनर्जी का शरीर में उपयोग नहीं हो पा रहा है वह वैसे ही यूरीन के माध्यम से निकली जा रही है। जो निकल नहीं पा रही है वह रक्त में घूम रही है। इस बीमारी को ठीक करने के लिए तीन काम करने हैं। डायबिटीज को तीन तत्व ठीक करते हैं-

(1) भोजन- भोजन ऐसा करें जो एकदम ऊर्जा नहीं देवें। शरीर को जितनी ऊर्जा की जरूरत हो इनसे ग्रहण कर ले अनावश्यक नहीं। 1. जैसे- अंकुरित मूंग, मेथी, मौठ, मटर, सोया, मूंगफली का सेवन करें। 2. मिक्स आटे की रोटी, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, चना।
ऐसे फल खायें जिसमें डायरेक्ट मिठास नहीं है। जैसे-आंवला, नींबू, जामुन, जामफल, ज्वार, सेब, अनार, नाशपाती, नाग, आलू बुखारा।
ऐसी सब्जियां खावें जो सहज पच जावे भारी नहीं हो और गर्मी नहीं करें। जैसे- लौकी, तोरई, ककड़ी, पत्ता गोभी, टमाटर, कद्दू, पेठा व परवल आदि।

(2) कसरत- जो खाते है उसको पचा नहीं पाते हैं इसलिए कसरत जरूर करें। डायबिटीज, शुगर, मधुमेह में ऊर्जा शक्ति को ठीक करने के लिए पाचन की क्रिया को अच्छी करना बहुत जरूरी है, इसके लिए उचित कसरत करें। इससे ऊर्जा का सदुपयोग शरीर में होने लगेगा और यह ऊर्जा ग्लूकोज लीवर पाचक रसों एवं पेन्क्रियाज के सहयोग से ग्लाईकोजन में बदलकर शरीर में नव निर्माण कर सकेगी।

1. जोगिंग- 10 मिनट तेज गति या मध्यम तेजी से जोगिंग करें या दौड़ लगावें तथा तेज गति से घूमना लाभकारी होता है।
2. दण्ड बैठक- सूर्य नमस्कार, तैराकी आदि।
3. कोई भी फिजिकल गेम्स वास्केट बाल, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो आदि खेलें।
4. योग- उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, भुजंगासन, पर्वतासन, सायकिलिंग, चक्रासन, शवासन, अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन, मण्डूकासन, धनुरासन।
5. झाड़ू, पोछा, बर्तन, कपड़े धोना, बागवानी, खेती के काम, शक्ति के काम करें, मेहनत करें।

(3) सम्यक् विश्राम - 8 से 9 घण्टे की सम्यक् नींद अच्छा भोजन, अच्छी कसरत करने के बाद ही आती है। तनाव, थकान, हताशा, निराशा, कुण्ठा, लाचारी, बीमारी में विश्राम अति आवश्यक है। काम, बोझ कई तरह के टेंशन से मुक्ति के लिए सम्यक् विश्राम जरूरी है। शरीर के अंगों की रिपेयरिंग मेंटेनेन्स निर्माण विश्राम की अवस्था में ही होती है। इसलिए शरीर को विश्राम अवश्य दें। ये तीनों काम अच्छी तरह से किये तो डायबिटीज से मुक्ति अवश्य मिल सकेगी।

डॉ. छैल बिहारी शर्मा
मुख्य चिकित्सक
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर

आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर की स्थापना 1913 में हुई थी। आर्य समाज बुढ़ाना की स्थापना उस समय हुई जब देश व प्रदेश में आर्य समाज का स्वर्णिम काल था। वर्ष 2013 में आर्य समाज बुढ़ाना का शताब्दी समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी थे। प्रत्येक वर्ष आर्य समाज में वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। आर्य समाज बुढ़ाना द्वारा वेद प्रचार हेतु "सत्यार्थ प्रकाश" निशुल्क वितरण किया जाता है तथा आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर द्वारा समय समय पर आर्य समाज को बढ़ावा देने हेतु कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं।

-अरविन्द कुमार, मंत्री
आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फरनगर

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।